

<http://www.darjeelingteagarden.com>

सम्पादकीय

संसद में भारत माता की तलाश

यह वाकई दुखद है कि आजादी के बहुप्रचारित अमृत काल को पार करने के बाद भी देश और नागरिकों की सर्वोच्च प्रतिनिधि कही जाने वाली संसद असली भारत माता को नहीं जानती। उत्तर-पूर्वी राज्य मणिपुर में जारी हिंसा को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ लाये गये अविश्वास प्रस्ताव के दौरान लोकसभा में हुई बहस से तो ऐसा ही महसूस होता है कि अब भी हमारे अधिकतर जन प्रतिनिधि इस बात से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं कि आखिर भारत माता कौन है। यह सवाल तब उठा जिस समय कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने कहा कि मणिपुर में श्भारत माता की हत्या हुई है। मोदी और उनके कारोबारी मित्र गौतम अदानी के रिश्तों को लेकर बेबाकी से प्रश्न उठाने वाले राहुल मोदी सरकार और पूरी भारतीय जनता पार्टी की स्वाभाविकतः आंखों की किरकिरी बने हुए हैं। मोदी सरनेम पर कर्नाटक की एक चुनावी टिप्पणी को लेकर उन पर दर्ज मुकदमे पर सुनाई सजा के कारण मार्च में उनकी सांसदी निलम्बित हो गयी थी।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा उनकी सजा पर रोक लगा देने के बाद उनकी सदस्यता बहाल कर दी गयी थी। फलतस्व वे सोमवार से फिर लोकसभा में अपनी सीट पर नजर आये। इस बीच कांग्रेस समेत विपक्षी गठबन्धन इंडिया ने मोदी के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है, जिस पर तीन दिवसीय बहस जारी है। अनुमानों के विपरीत राहुल ने प्रस्ताव पर पहले दिन यानी मंगलवार को न बोलकर अपना वक्तव्य बुधवार को दिया। अपेक्षा के मुताबिक उन्होंने वहीं से अपने भाषण की शुरुआत की जहां उन्होंने पिछली बार छोड़ा थाय यानी गौतम अदानी को लेकर। उन्होंने उसमें मणिपुर को भी जोड़ा जो चर्चा का केन्द्रीय विषय है। साथ ही हरियाणा की हिंसा की बात भी छेड़ते हुए आरोप लगाया कि श्आप पूरे देश को जलाने में लगे हो।

अदालत में जीत दर्ज कराने और खोया शासकीय आवास फिर से पा लेने का विजयी भाव तो उनकी मुद्रा और व्यवहार में नजर नहीं आया परन्तु भाजपा की खीझ और अपराध भाव के दर्शन चर्चा के पहले दिन ही होने लग गये थे। बहस को असम के सांसद गौरव गोगोई की ओर से शानदार शुरुआत मिलने से और भी परेशान भाजपा की झुंझलाहट निश्चिंकांत दुबे के बयान में देखने को मिली जब उन्होंने व्यक्तिगत छींटकशी करते हुए कहा कि श्शोनिया गांधी यहां बैठे को सेट करने और दामाद को बेंट करने के लिये बैठी हैं। इस घटिया टिप्पणी को शालीनता से दरकिनार करने वाली राहुल की मां का उल्लेख बुधवार को फिर से हुआ जब राहुल ने मणिपुर की भयावह स्थिति का वर्णन करते हुए इस बात का जिक्र किया कि मोदी उस हिंसाग्रस्त राज्य में नहीं गये क्योंकि वे मणिपुर को भारत का हिस्सा ही नहीं मानते।श् भाजपा सरकार द्वारा वहां अपनाई गयी विभाजनकारी नीति की कड़ी आलोचना करते हुए राहुल ने कहा कि श्एक मेरी मां यहां बैठी हैं और दूसरी मां मणिपुर है जिसकी आप ने हत्या की है। उन्होंने अपने भाषण में रामायण का संदर्भ देते हुए यह भी जोड़ा कि जैसे रावण केवल कुम्भकर्ण और मेघनाद की ही बात मानता था, वैसे ही मोदी केवल अमित शाह (केन्द्रीय गृह मंत्री) और अदानी की बात मानते हैं। राहुल ने मोदी पर भारत माता की हत्या का आरोप लगाया, जो सांकेतिक अर्थ में था। अमेठी लोकसभा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में उनकी प्रतिद्वंद्वी स्मृति ईरानी ने मौके को लपकते हुए इसे अपने भाषण का मुद्दा बना दिया। उन्होंने कहा कि श्जब राहुल कह रहे थे कि भारत माता की हत्या की जा रही है तो कांग्रेसी तालियां पीट रहे थे। सवाल यह है कि राहुल गांधी के लिये आखिर भारत माता कौन है और स्मृति ईरानी किसे भारत माता मानती हैं। राहुल के परनाना व देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अहमदनगर जेल में लिखी अपनी प्रसिद्ध किताब हिन्दुस्तान की कहानी में बतलाया है कि श्कभी ऐसा भी होता है कि मैं किसी जलसे में पहुंचता हूं तो मेरा स्वागत श्भारत माता की जय!श् के साथ होता है। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता हूं कि इस नारे का मतलब क्या है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं?श् आगे नेहरू लिखते हैं कि श्जब उन्हें जवाब नहीं सूझता तो मैं ही उन्हें बताता हूं कि हिन्दुस्तान की नदी, पहाड़, जंगल, खेत जो हमें अन्न देते हैं वे सारे हमें अजीज हैं लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है, वे हैं हिन्दुस्तान के लोग। उनके और मेरे जैसे लोग जो इस सारे देश में फैले हुए हैं। भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं और भारत माता की जय! से मतलब हुआ इन लोगों की जय। मैं उन लोगों से कहता हूं कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम ही भारत माता हो। असली मतांतर यही है कि राहुल लोगों में ही भारत माता को देखते हैं जबकि स्मृति ईरानी जिस विचारधारा की नुमाइंदगी करती हैं वह भारत माता को एक दैवीय स्वरूप में परिकल्पित कर जनता के भौतिक दायित्वों से मुक्त हो जाती हैं। जनता जनार्दन में भारत माता को देखने का अर्थ है उसकी जरूरतों को समझते हुए उसकी तरक्की व खुशहाली के प्रति दायित्वबोध और उसके सुख-दुख में शामिल होना। भारत माता को ईश्वरीय रूप देने का उद्देश्य उसके नाम से लोगों का भावनात्मक दोहन कर उसका सियासी लाभ लेना है। भारत में जारी विचारधाराओं के बीच जारी मौजूदा संघर्ष का यह महीन पहलू है जिसे स्मृति ईरानी को नहीं जनता को समझना होगा।

मणिपुर को इंसाफ मिले

मणिपुर हिंसा को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने जिस तत्परता से कदम उठाए, वह राज् य सरकार की अक्षमता जाहिर करती है। वायरल वीडियो पर अदालत ने केंद्र व राज् य सरकार से साफ कहा था कि या तो आप कुछ कीजिए या हम करेंगे। मणिपुर में हिंसा और महिलाओं पर हुए घृणित यौन हमलों के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को जिस तरह के कदमों की घोषणा की, वह राज्य प्रशासन की अक्षमता और लापरवाही पर बेहद तल्ख टिप्पणी तो है ही, सर्वोच्च अदालत की संवेदनशीलता और तत्परता का भी सटीक उदाहरण है। जब मणिपुर में दो महिलाओं को निर्वस्त्र धुमाए जाने का विडियो वायरल हुआ था, तभी सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए केंद्र और राज्य सरकारों से स्पष्ट कहा था कि या तो आप जरूरी कदम उठाइए या हम उठाएंगे। हैरत और दुख की बात है कि राज्य प्रशासन इस मोर्चे पर बुरी तरह नाकाम साबित हुआ। न केवल वायरल विडियो से जुड़े उस मामले में बल्कि महिलाओं के साथ हुए वैसे ही अन्य मामलों में भी जांच का काम ना के बराबर हुआ। राज्य से हिंसात्मक घटनाओं की खबरें आनी अब भी बंद नहीं हुई हैं। यही नहीं, राहत और पुनर्वास के काम में भी काफी शिकायतें मिल रही हैं।

राज्य की आबादी के अलग-अलग हिस्सों में स्थानीय पुलिस प्रशासन को लेकर विश्वास का संकट भी बना हुआ है। इन सबके मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट की पूर्व महिला जजों की एक समिति बनाई जो राहत, पुनर्वास के कार्यों की निगरानी करेगी और जहां जरूरी होगा, वहां तत्काल

हस्तक्षेप करेगी। इसके अलावा राज्य में मई से जुलाई के बीच दर्ज हुए साढ़े छह हजार से ज्यादा श्त् से जुड़े मामलों की जांच पर नजर रखने के लिए महाराष्ट्र कैडर के रिटायर्ड ज्जै अ फिसर की नियुक्ति करने और ब्ठ् को भेजे गए मामलों में भी DSP/SP लेवल के अन्य राज्यों के आफिसर तैनात करने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया। ऐसे और भी कदमों के जरिए सुप्रीम कोर्ट ने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की है कि जांच कार्यों में स्थानीय पुलिस की भूमिका जरूर हो लेकिन इसे उन पूर्वाग्रहों से प्रभावित न होने दिया जाए, जो ऐसे माहौल से पुलिस फोर्स में भी विकसित हो जाते हैं और जिनके अधोषित प्रभावों के कारण ही वहां अब तक जांच-प्रक्रिया ढंग से आगे नहीं बढ़ पा रही थी। निश्चित रूप से ये सारे कदम अभी घोषणा के स्तर पर ही हैं। इन पर आगे किस तरह से अमल होता है और जमीन पर ये कदम कितने प्रभावी साबित होते हैं, यह देखने वाली बात होगी। लेकिन इसमें दो राय नहीं कि सुप्रीम कोर्ट ने इन कदमों के जरिए यह स्पष्ट कर दिया कि मणिपुर में पिछले तीन महीनों से भी ज्यादा समय से जारी अराजकता की स्थिति से निपटने में राज्य सरकार के प्रयास कितने अपर्याप्त थे और वहां किस तरह से दखल देने की जरूरत थी। जो कुछ सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को किया वह मूलतस्व कार्यपालिका की ही जिम्मेदारी थी, लेकिन वह एक अलग पक्ष है जिस पर लोकसभा में मंगलवार को पेश किए गए अविश्वास प्रस्ताव पर तीन दिनों की विस्तृत चर्चा के दौरान रोशनी पड़ने की उम्मीद की जा सकती है।

तल्ख तेवर

विपक्ष की ओर से लाए गए अविश्वास प्रस्ताव के दौरान बुधवार को बहस की शुरुआत कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने की। उनके भाषण का इंतजार एक दिन पहले से किया जा रहा था क्योंकि मंगलवार को कांग्रेस की ओर से ट्वीट करके बता दिया गया था कि अविश्वास प्रस्ताव पर विपक्ष की ओर से पहले वक्ता राहुल गांधी होंगे। हालांकि आखिरी पलों में प्लान फिर से बदलते हुए गौरव गोगोई से ही चर्चा की शुरुआत करवाई गई, जिस पर सत्तारूढ़ पक्ष के सदस्यों ने सदन के अंदर सवाल भी उठाया। लेकिन हर पार्टी को अपनी रणनीति में जब चाहे बदलाव करने का हक है। इसलिए इन आपत्तियों को ज्यादा तवज्जो नहीं दी जा सकती। हां, यह सवाल जरूर किया जा सकता है कि राहुल गंधी ने अपने भाषण में जिस तरह की आक्रामकता दिखाई और जितने तीखे शब्दों का प्रयोग किया क्या सचमुच उसकी जरूरत थी। इसमें दो राय नहीं कि पिछले तीन महीने से भी ज्यादा समय से मणिपुर के हालात बहुत खराब हैं। वहां हुई घटनाएं बेहद दुर्भाग्यपूर्ण हैं। लेकिन क्या मणिपुर भारत का अंग नहीं रहा? क्या राज्य अभी भी एक इकाई बना हुआ नहीं है? क्या सत्तारूढ़ पक्ष को देशद्रोही बताने से हालात सुधारने में कोई मदद मिलने वाली है?

विपक्ष को अपनी बात कहने का पूरा हक है, लेकिन राज्य पहले से ही खतरनाक और संवेदनशील दौर से गुजर रहा है। ऐसे में हालात को और बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना क्या ठीक माना जाएगा। बहरहाल, राहुल गांधी के भाषण पर कइयों की नजरें टिकी थीं और उन्होंने अपने इस बेहद तीखे, आक्रामक भाषण से सरकार पर विपक्षी हमलों का टोन सेट कर दिया। यह बात पहले से ही कही जा रही थी कि विपक्ष की ओर से अविश्वास प्रस्ताव लाने का एकमात्र मकसद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सदन में मणिपुर पर बयान देने के लिए मजबूर करना है।

राहुल गांधी ने अपने भाषण को लगभग पूरी तरह मणिपुर पर केंद्रित रखकर यह साबित किया कि विपक्ष सरकार के लिए चर्चा इधर-उधर ले जाने की गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहता। राहुल गांधी ने आइडिया अ फ इंडिया के उस मुद्दे को भी इसी में जोड़ दिया, जो मोदी सरकार पर उनका मुख्य आरोप रहा है कि यह सरकार आइडिया अ फ इंडिया पर हमले कर रही है, कि भारत की विविधताओं को अक्षुण्ण रखने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है।

राहुल गांधी के ठीक बाद बोलने खड़ी हुई केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कश्मीर और अन्य प्रांतों की हिंसा का मसला उठाया, लेकिन उससे संदेश यह जा सकता है कि सरकार के पास मणिपुर पर कहने के लिए कुछ ख़ास नहीं है। राहुल गांधी के कथित फ्लाइंग किस को अभद्रता करार देने की कोशिश भी अच्छी रणनीति नहीं कहलाएगी। उम्मीद की जानी चाहिए कि बाद के वक्ता (सत्ता पक्ष के) मणिपुर और अन्य मसलों पर लगाए गए विपक्ष के आरोपों का ज्यादा कारगर, सटीक और ठोस जवाब देंगे।

बिल्किस बानो से राखी बंधवा लें मोदीजी

हरियाणा में दंगों की आग भड़क गई थी और अब वहां कई जगहों पर मुस्लिमों का आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार करने का ऐलान पोस्टरों के भाषणों के जरिए किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के अशोक नगर में ग्राम पंचायत धोरा के चार गांवों में सरपंच के कहने पर ईसाई और मुस्लिम व्यापारियों के प्रवेश को रोक दिया गया है। देश में चारों ओर असुरक्षा का माहौल बन रहा है, मोदीजी किस-किस को राखी बांधने और बंधवाने की सलाह देंगे।

रक्षाबंधन में अभी काफी दिन हैं, अगर प्रधानमंत्री जी का कोई कार्यक्रम अब तक सुनिश्चित न हुआ हो कि वे इस बार देश के किस कोने में पहुंचकर, किस तबके की महिलाओं से राखी बंधवाने वाले हैं, तो उन्हें सलाह है कि इस बार वे अपने गृहराज्य चले जाएं। वहां बिल्किस बानो रहती हैं। श्री मोदी इस बार बिल्किस बानो से रक्षासूत्र बंधवा लें तो अमृतकाल का यह अमृत क्षण बन कर देश के इतिहास में सदा के लिए अमृत स्मृति बन जाएगा। बिल्किस बानो मुस्लिम महिला हैं, तो उनसे राखी बंधवाकर श्री मोदी अपने ही वचनों को सार्थक करेंगे। इस तरह मोदीजी, पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे की मिसाल भी अपने सांसदों के सामने पेश कर सकते हैं।

हाल ही में दो बैठकों में उन्होंने भाजपा और एनडीए के नेताओं से मुस्लिम महिलाओं के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाने को कहा है, ताकि वे सुरक्षित महसूस कर सकें। तो इसकी शुरुआत उन्हें ही करना चाहिए। वैसे सवाल किया जा सकता है कि आखिर ६ सालों में मोदी सरकार ऐसा माहौल क्यों नहीं बना पाई कि मुस्लिम या किसी भी तबके की महिलाएं सुरक्षित महसूस कर सकें। सवाल ये भी है कि महिलाओं को सुरक्षित महसूस करवाने के लिए उनसे राखी बंधवाने की क्या जरूरत। क्या मोदीजी भी राखी के त्योहार को केवल इसी नजरिए से देखते हैं कि भाई की कलाई पर रक्षासूत्र इसलिए बांधा जाता है ताकि वो बहन की हिफाजत कर सके। क्या महिलाएं अपनी हिफाजत खुद करने के काबिल नहीं हैं। अगर नहीं हैं, तो क्या उन्हें इस काबिल नहीं बनाया जाना चाहिए। मोदी सरकार जिस महिला सशक्तीकरण और नारी शक्ति की बात करती रही है, क्या वो केवल जुबानी और कागजी थीं, उनका हकीकत से कोई वास्ता नहीं था। खैर महिलाओं की रक्षा हो न हो, महिलाएं रोज प्रताड़ना का शिकार होती रहीं, फिर भी रक्षाबंधन का त्योहार तो जैसे सदियों से मनता आया है वैसे ही आगे भी चलता रहेगा। अभी पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव होने हैं और फिर अगले साल आम चुनाव हैं, जिसमें इस बार भाजपा को इंडिया से मुकाबला करना है, तो अब भाजपा इसके लिए नयी-नयी तिकड़में भिड़ाने में लगी है। इंडिया यानी २६ दलों के गठबंधन में एकता बनी रही और आगे कुछ और दल इसमें शामिल हो गए, तो फिर भाजपा का लोकसभा में ३ सौ पार का सपना धरा का धरा रह जाएगा। अब तो राहुल गांधी मानहानि की सजा से मुक्त हो चुके हैं, और संसद भी फिर से आ गए हैं। इससे मोदी सरकार की मुश्किलें और बढ़ेंगी, ये तय है।

राजनैतिक मुश्किलों का समाधान राजनैतिक तरीकों से ही निकालने की कोशिश करनी चाहिए। मगर मोदीजी इसमें घालमेल करने में लगे हैं। राम मंदिर बनना शुरु हो चुका है, जिसका उद्घाटन अगले साल की पहली तारीख को शायद हो जाए।

काशी में ज्ञानवापी मस्जिद में एएसआई सर्वे करने में लगी है। मथुरा की शाही ईदगाह भी कतार में है। तो अयोध्या, मथुरा, काशी के बाद हिंदुत्व को और कैसे भुनाया जाए, इसकी तलाश भाजपा कर रही होगी। हिंदुओं के साथ-साथ आदिवासियों के लिए भाजपा जाल बिछा ही चुकी है। इधर पसमांदा मुस्लिमों को अपने पाले में करने की कोशिश भाजपा कर रही है। इसके साथ ही मुस्लिम महिलाओं की याद भी श्री मोदी को आ गई। इस याद का सीधा संबंध चुनावों से है, इंडिया के गठन से है।

जब मुस्लिम महिलाओं से ही राखी बंधवानी है, तो मोदीजी को बिल्किस बानो से राखी बंधवा कर इसकी शुरुआत करना चाहिए। उनके मुख्यमंत्री रहते हुए ही गुजरात दंगों में बिल्किस बानो के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया था। उनके परिवार के लोगों को उनकी आंखों के सामने मारा गया था। बलात्कारी और हत्यारे बिल्किस के गांव के ही थे और वो उनसे हाथ जोड़ कर रहम की अपील करती रहीं कि वो उनकी बहन के समान हैं। लेकिन अपराधियों ने बिल्किस को एक मुस्लिम और एक महिला की तरह ही देखा, जिस पर वो बल प्रयोग कर सकते थे। अपने अपराधियों को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचवाने में बिल्किस को दो दशकों का लंबा वक्त लग गया। इस दौरान उनका आत्मसम्मान चकनाचूर किया गया, उनके मामूली सपनों तक को रौंद दिया गया। इतना काफी नहीं था तो अच्छे आचरण का हवाला देते हुए बिल्किस के बलात्कारियों को पिछले साल जेल से छोड़ भी दिया गया और बाकायदा उनका फूल माला के साथ स्वागत किया गया। भाजपा के नेता ने इन लोगों को संस्कारी ब्राह्मण तक कहा था। बिल्किस बानो के गुनहगारों को दोषी ठहराने और सजा देने वाले निचली अदालत के जज यूडी साल्वी, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, उन्होंने गुनहगारों के जेल से बाहर निकलने और इस पर मिठाई बांटे जाने, माला पहनाकर स्वागत किए जाने को लेकर कहा था कि ये सही नहीं है। लेकिन मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में इस मामले पर दायर याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान भारत के एंडिशनल स लिसिटर जनरल एस वी राजू ने पूछा, जेल से बाहर आने वाले परिवार के सदस्य को माला पहनाने में क्या गलत है?

रुपये ही नहीं सपने भी ले भागीं चिट फंड कंपनियां आवेदन के साथ जुड़ी लोगों की उम्मीदें

गोरखपुर। एडीएम (वित्त एवं राजस्व) विनीत सिंह ने कहा कि सभी तहसीलों में आवेदन पत्र जमा कराए जा रहे हैं। इसके अनुसार ही डाटा तैयार किया जाएगा। तभी यह तय हो सकेगा कि लगभग कितनी रकम लेकर चिट फंड कंपनियां भागी हैं। शासन के निर्देश पर यह कार्रवाई की जा रही है। गोरखपुर जिले में आफिस खोलकर चिट फंड कंपनियां रुपये नहीं लोगों के सपने लेकर भागी हैं। कम समय में दोगुना लाभ मिलने के चक्कर में लोगों ने अपनी जमा-पूंजी गंवा दी। अब शासन के निर्देश पर डूबी हुई रकम वापस मिलने की उम्मीद लोगों में जगी है। इसलिए पीड़ित तहसील मुख्यालयों में पहुंचकर आवेदन जमा करा रहे हैं।

सदर सहित अन्य तहसीलों में 9600 से अधिक आवेदन पत्र जमा हो चुके हैं। अधिकारियों का कहना है कि सभी के आवेदन पत्रों को इकट्ठा करने के बाद अ नलाइन डाटा फीड करके शासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी। इसके लिए कोई अंतिम समय सीमा नहीं तय की गई है।

रुपये लेकर भाग गई कंपनी, सदमे में कई दिन नहीं किया भोजन

बांसगांव के दुबौली की रहने वाली सुनीता शर्मा ने 22 फरवरी 2019 को चिट फंड कंपनी में 39500 रुपया जमा कराया। तब उनको एजेंट ने बताया कि साढ़े पांच साल में ही दोगुनी रकम मिल जाएगी। उनको लगा कि जब पैसा मिलेगा तो इससे बेटे-बेटियों की शादी में मदद मिल जाएगी। 22 मई 2019 को जब वह भुगतान लेने गई तो मालूम हुआ कि कंपनी भाग गई। रुपये डूबने के सदमे में उन्होंने कई दिनों तक भोजन नहीं किया।

रुपये डूबे तो कई दिन घर से नहीं निकले

अतरौली के रहने वाले विजय यादव कोई बड़ा व्यवसाय करना चाहते थे।



दिन-रात मेहनत करके उन्होंने 66 हजार रुपये जुटाए। एक एजेंट के झांसे में आकर रुपये जमा करा दिए। तीन साल बाद मालूम हुआ कि जिस कंपनी में उन्होंने रुपये जमा कराए, वह तो भाग गई। कई दिनों तक वह परेशान रहे। कुछ परिचितों ने निराश न होने का वीसला दिया तो कुछ ने उनका मजाक बनाया। इससे परेशान होकर वह कई दिनों तक घर से बाहर निकलने से बचते रहे।

दावा: लोगों की डूबी रकम दो करोड़ से अधिक

गोरखपुर जिले में एक दर्जन से अधिक चिट फंड कंपनियां खोलकर संचालकों और कर्मचारियों ने लोगों को कम समय में अधिक लाभ देने का झांसा दिया। इस चक्कर में पड़कर लोगों ने मेहनत से कमाई पूंजी जमा कराई। किसी ने बेटी की शादी, तो किसी ने बच्चों की पढ़ाई तो किसी ने आगे चलकर मकान बनवाने का सपना संजोया, लेकिन रुपये जमा कराने के बाद भुगतान का समय आया तो कंपनियां बोरिया-बिस्तर समेटकर

इन कंपनियों में लोगों ने जमा कराई है रकम

पियरलेस, पवन, स्काईलैंड, कल्पतः, जीसीए, लीला लीजिंग एंड हाउसिंग फाइनेंस, यक्ष फाइनेंस सहित एक दर्जन से अधिक कंपनियों में लोगों ने रकम जमा कराई है। इनमें उन्हीं कंपनियों के लिए ज्यादातर आवेदन आ रहे हैं, जो वर्ष 2019 के बाद खुली थीं। तहसील कर्मचारियों का कहना है कि अभी तक 2019 के बाद ही आवेदन पत्र आए हैं। एडीएम (वित्त एवं राजस्व) विनीत सिंह ने कहा कि सभी तहसीलों में आवेदन पत्र जमा कराए जा रहे हैं। इसके अनुसार ही डाटा तैयार किया जाएगा। तभी यह तय हो सकेगा कि लगभग कितनी रकम लेकर चिट फंड कंपनियां भागी हैं। शासन के निर्देश पर यह कार्रवाई की जा रही है।

लापता हो गई। इसके बाद लोग बांड, रसीद और अन्य कागजात लेकर दर-दर भटकते रहे। लेकिन कहीं से कोई मदद नहीं मिल सकी। शासन से निर्देश के बाद जब प्रक्रिया शुरू हुई है तो तहसीलों में लाइन लग गई है। बुधवार को सदर तहसील सहित अन्य जगहों पर कुल 9656 आवेदन जमा हो चुके थे। कर्मचारियों के अनुसार, इन आवेदनों में पांच हजार से लेकर दो-दो लाख तक का जिक्र है। अधिकांश ग्राहकों ने 50 हजार से लेकर एक लाख रुपये तक जमा कराए हैं। एक अनुमान के अनुसार, करीब दो करोड़ रुपये की वापसी के लिए आवेदन हो चुका है। कर्मचारियों का कहना है कि अभी कोई अंतिम तिथि समय सीमा तय नहीं है। इसलिए आवेदन पत्र लिए जाएंगे।

गोरखपुर विश्वविद्यालय

स्नातक के छह पाठ्यक्रमों में सत्र 2023-24 में 25 फीसदी सीटें घटीं



गोरखपुर। असुर के मीडिया प्रभारी अमरनाथ निषाद ने कहा कि सीटों में कटौती से सभी कोर्स के न्यूनतम मेरिट वाले छात्र स्वतः ही बाहर हो गए हैं। विश्वविद्यालय के ऐसे निर्णय से सबसे ज्यादा एससी, एसटी और ओबीसी के छात्र-छात्राएं प्रभावित होंगे। कहा कि अगर विश्वविद्यालय प्रशासन ने जल्द इस पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया तो उग्र प्रदर्शन करने को बाध्य हो जाएंगे। गोरखपुर विश्वविद्यालय में सत्र 2023-24 में स्नातक के छह पाठ्यक्रमों में 25 प्रतिशत सीटों की कटौती कर दी गई है। जिससे इन पाठ्यक्रम में इस सत्र में 959 सीटें कम हो गई हैं। पिछले सत्रों में इन पाठ्यक्रमों में 3956 सीटों पर प्रवेश लिया गया था जबकि इस सत्र में 3005 सीटों पर प्रवेश लिया जा रहा है। इसको लेकर छात्रों में आक्रोश पनपता जा रहा है।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में शुल्क वृद्धि का मामला अभी शांत भी नहीं हुआ था कि सीट कटौती से छात्र परेशान हो उठे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने गुपचुप तरीके से स्नातक के छह पाठ्यक्रम बीए, बीएससी मैथ, बीएससी ब यो, बीएससी एजी, बीक म, बीबीए में 959 सीटों की कटौती की है। पिछले चार सत्र से इन सभी पाठ्यक्रमों में 3956 सीटों पर प्रवेश लिया जा रहा था। छात्रों का कहना है कि सीट कटौती से मेरिट में नीचे रहने वाले छात्र प्रवेश पाने से वंचित हो जाएंगे।

छह पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए निर्धारित सीट की स्थिति

बीए में 9584, बीएससी मैथ में 280, बीएससी ब यो में 920, बीक म में 800, बीएससी एजी में 280 और बीबीए में 60 सीटें प्रवेश के लिए निर्धारित की गई हैं। इसमें 90 प्रतिशत ईडब्ल्यूएस की सीटें भी शामिल हैं।

सीट कटौती के विरोध में असुर ने बुलंद की आवाज

गोरखपुर विश्वविद्यालय की ओर से 25 फीसदी सीटों की कटौती के विरोध में अंबेडकर स्टूडेंट यूनियन फ र राइट (असुर) ने बुधवार को मुख्यद्वार पर प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने बारिश के बीच अपनी आवाज बुलंद की। असुर के मीडिया प्रभारी अमरनाथ निषाद ने कहा कि सीटों में कटौती से सभी कोर्स के न्यूनतम मेरिट वाले छात्र स्वतः ही बाहर हो गए हैं। विश्वविद्यालय के ऐसे निर्णय से सबसे ज्यादा एससी, एसटी और ओबीसी के छात्र-छात्राएं प्रभावित होंगे। कहा कि अगर विश्वविद्यालय प्रशासन ने जल्द इस पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया तो उग्र प्रदर्शन करने को बाध्य हो जाएंगे। इस मौके पर ईश्वर कुमार विश्वविद्यालय प्रभारी, ईश कुमार, आकाश पासवान, शुभम सोनकर, सिया साहनी, विभा गौतम, जितेंद्र कुमार, मंजेश कुमार, आदित्य देव, कुमारी प्रियंका, गोल्डन कुमार आदि मौजूद रहे।

गोरखपुर में जलभराव

एक रात की बारिश से शहर के नाले चौक सांसत में फंसे लोग, तस्वीरों में देखें झलक



गोरखपुर। गोरखपुर शहर में बारिश से बेतियाहाता, रुस्तमपुर, आजाद नगर समेत कई मोहल्लों में जलभराव हो गया। इसकी मुख्य वजह यह है कि इन इलाकों के अधिकांश नाले-नालियां चौक हैं। इसलिए पानी निकलने में घंटों लग जा रहे हैं।

बुधवार को दिन हुई बूढ़ाबादी का पानी भी कई जगह सड़कों पर दिखने लगा था। ऐसे में गुरुवार को मूसलाधार बारिश होने से शहर के दर्जनों मोहल्लों में पानी भर गया।

सिविल लाईंस के अलावा जलभराव की वजह से विजय चौक चौराहे के आसपास सड़क पर पानी भर गया। सड़क किनारे की दुकानें सुबह नहीं खुल सकीं। दुकानदार किशन ने बताया कि विजय चौक तो बेहद खास बाजारों में से एक है। लेकिन जरा सी बारिश में यहां जलभराव हो जाता है। बुधवार से ही व्यापार पूरा ठप हो गया है।

ऐसे ही स्थिति दाउदपुर इलाके में भी बनी रही। सावन महीने में काली मंदिर जाकर पूजा करने वाले लोग घरों से बाहर नहीं निकल सके। इलाके के आलोक ने बताया कि सुबह भगवान शिव को जल चढ़ाने के बाद ही अपने आगे का काम करते हैं। लेकिन बारिश की वजह से पूरे इलाके में पानी भर गया। घर से निकलने में घुटने तक पानी लग जाता है।

बारिश के फिलहाल नहीं टूट रही है। महज एक रात की बारिश से शहर के कई इलाकों में जलभराव हो गया। शहर के रेती, नखास, इस्माइलपुर, घोषकंपनी, मिर्जापुर, तारामंडल, दाउदपुर, गोरखनाथ आमबाग, गोपलापुर, सूरजकुंड, रसूलपुर, हुमायुपुर समेत करीब 50 से अधिक मोहल्लों में बारिश का पानी भर गया। दिनभर शहर के कई इलाकों में रूक-रूक कर बारिश होती रही। अधिकतम तापमान 22.2 डिग्री सेल्सियस



दर्ज किया जो सामान्य से दो डिग्री सेल्सियस कम रहा। न्यूनतम तापमान 24.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया जो सामान्य से दो डिग्री सेल्सियस कम रहा। मौसम विज्ञान विभाग ने अभी चार दिन ऐसे ही मौसम रहने का अनुमान जताया है।

बांके बिहारी मंदिर की जमीन कब्रिस्तान के रूप में दर्ज करने पर इलाहाबाद हाई कोर्ट गंभीर

तहसीलदार को किया तलब



इलाहाबाद हाई कोर्ट ने बांके बिहारी मंदिर की जमीन कब्रिस्तान के रूप में दर्ज करने के मामले में तहसीलदार छाता को व्यक्तिगत रूप से 17 अगस्त को हाजिर होने का आदेश जारी किया है। बता दें कि भोला खान पठान ने राजस्व अधिकारियों की मिलीभगत से 1994 में उक्त भूमि को कब्रिस्तान के रूप में दर्ज करा ली थी।

प्रयागराज, विधि संवाददाता। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने मथुरा स्थित बांके बिहारी मंदिर के नाम दर्ज जमीन को राजस्व अभिलेखों में पहले कब्रिस्तान फिर पुरानी आबादी दर्ज करने के मामले को गंभीरता से लिया है। कोर्ट ने तहसीलदार छाता को १७अगस्त को स्पष्टीकरण के साथ तलब किया है और पूछा है कि शाहपुर गांव के प्लाट १०८१की स्थिति राजस्व अधिकारी द्वारा समय – समय पर क्यों बदली गई? यह आदेश न्यायमूर्ति सौरभ श्रीवास्तव ने श्री बिहारी जी सेवा ट्रस्ट की याचिका की सुनवाई करते हुए दिया है। याचिका पर अधिवक्ता राघवेंद्र प्रसाद मिश्र ने बहस की। इनका कहना है कि प्राचीन काल से ही गाटा संख्या १०८१ बांके बिहारी महाराज के नाम से दर्ज था। भोला खान पठान ने राजस्व अधिकारियों की मिलीभगत से २००४ में उक्त भूमि को कब्रिस्तान के रूप में दर्ज करा लिया।

जानकारी होने पर मंदिर ट्रस्ट ने आपत्ति दाखिल की। प्रकरण वक्फ बोर्ड तक गया और सात सदस्यीय टीम ने जांच में पाया कि कब्रिस्तान गलत दर्ज किया गया है। इसके बावजूद जमीन पर बिहारी जी का नाम नहीं दर्ज किया गया। इस पर यह याचिका दायर की गई है। कोर्ट ने तहसीलदार छाता को व्यक्तिगत रूप से १७ अगस्त को हाजिर होने का आदेश जारी किया है।

गाजीपुर और जमनिया निकाय के अधिकारियों ने लगाया 1.51 करोड़ का चूना

गाजीपुर। स्थानीय निधि लेखा परीक्षा विभाग की रिपोर्ट से बड़ा खुलासा हुआ है। नगर पालिका गाजीपुर और नगर पालिका जमानिया के तत्कालीन अधिकारियों ने १.५१ करोड़ रुपये का चूना लगाया है। वित्तीय अनियमितता की खबर सामने आने से विभागीय अधिकारियों में हड़कंप मचा हुआ है। निधि लेखा परीक्षा विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक दोनों नगर निकायों में कुल १ करोड़ ५१ लाख ३ हजार ८०८ रुपये की वित्तीय अनियमितता सामने आई है। इसमें नगर पालिका गाजीपुर में ७६ लाख ८६ हजार ७०१ रुपये की वित्तीय अनियमितता वर्ष २०१७-१८ में की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक आडिट प्रमाण पत्र उपलब्ध न कराने ने पालिका की निधि को ७४ लाख २० हजार ५०१ रुपये की क्षति हुई है, जबकि पालिका के आवास में आवासित कर्मचारियों से १० प्रतिशत किराये की कटौती न किए जाने का मामला सामने आया है। इससे पालिका की निधि को ५ लाख ६६ हजार २०० रुपये की आर्थिक क्षति हुई है। इसी तरह नगर पालिका परिषद, जमनिया में वर्ष २०१७-१८ में ७१ लाख १४ हजार ७ रुपये की वित्तीय अनियमितता की बात सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक शासन के गजट के बावजूद वर्ष २०१७-१८ में पार्किंग शुल्क का ठेका विभागीय वसूली न किए जाने की बात सामने आई है। इससे ठेके मूल्य में १० प्रतिशत की वृद्धि नहीं हो सकी, जिससे पालिका को ३७ लाख ५१ हजार रुपये की आर्थिक क्षति है। यही नहीं, ईपीएफ राशि न जमा किए जाने की भी बात सामने आई है। नगर पालिका प्रशासन के सहमति बगैर ३० लाख ४५ हजार ६७६ रुपये आहरित किए से वित्तीय अनियमितता की बात सामने आई है। इसके अलावा रिपोर्ट के मुताबिक श्री बैकुण्ठ के घर से कब्रिस्तान तक सड़क निर्माण कार्य में इस्टीमेट से अधिक कार्य कराये जाने से ३ लाख रुपये ८८ हजार १२८ रुपये का अधिक भुगतान किए जाने की बात सामने आई है।

छात्रा श्रेया की मौत का सच आएका सामने

अब मऊ के सीओ सिटी करेंगे जांच, आरोपी शिक्षकों को मिली जमानत
आजमगढ़। आजमगढ़ स्थित चिल्ड्रन गर्ल्स स्कूल में कक्षा ११ की छात्रा की आत्महत्या मामले की जांच मऊ के सीओ सिटी करेंगे। सीजीएम कोर्ट से इस मामले में आरोपी प्रधानाचार्य और क्लास टीचर को जमानत मिल गई है। दोनों पर आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा दर्ज है। यूपी के आजमगढ़ स्थित चिल्ड्रन गर्ल्स स्कूल में कक्षा ११ की छात्रा की आत्महत्या मामले में एक नया मोड़ आया है। प्रकरण में सीजेएम कोर्ट ने आरोपी प्रधानाचार्य सोनम मिश्रा और कक्षा अध्यापक अभिषेक राय को जमानत दे दी है। जमानत का आदेश जिला जेल पहुंच गया है। इसकी पुष्टि जेलर ने की है। गुरुवार को जेल से रिहाई संभव है। दूसरी तरफ, मामले की विवेचना मऊ के सीओ सिटी को सौंप दी गई है। ३१ जुलाई को चिल्ड्रेन गर्ल्स क लेज की छात्रा ने तीसरी मंजिल से कूदकर जान दे दी थी। इस मामले में प्रधानाचार्य और कक्षा अध्यापक के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया था। विवेचना के बाद पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार करते हुए हत्या की धारा को हत्या के लिए उकसाने की धारा में बदल दिया था। दोनों को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेज दिया था। इसके विरोध में प्रदेश के सभी निजी विद्यालय बंद रखे गए थे। अभिभावक संघ के नेतृत्व में सामाजिक संगठनों ने इस बंदी का विरोध किया। प्रधानाचार्य और कक्षा अध्यापक की ओर से जमानत की अर्जी दी गई थी। अब जमानत का आदेश जिला कारागार पहुंच गया है। हालांकि आदेश देर शाम पहुंचने के कारण रिहाई नहीं हो सकी।

निष्पक्ष और गुणवत्तापूर्ण विवेचना के लिए मऊ के सीओ सिटी को सौंपी गई जांच

जेलर आरएन मौर्य ने बताया कि सीजेएम की ओर से प्रधानाचार्य और कक्षा अध्यापक की रिहाई का आदेश मिल चुका है, लेकिन हाईकोर्ट के निर्देशानुसार ५रु३० बजे के बाद आने वाले रिहाई के आदेश पर दूसरे दिन अमल का आदेश है। इसके कारण दोनों को रिहा नहीं किया जा सका। अब गुरुवार सुबह दोनों की रिहाई की जाएगी। अब इस मामले की विवेचना सीओ सिटी मऊ को सौंप दी गई है। पहले आजमगढ़ पुलिस ही मामले की जांच कर रही थी। एसपी अनुराग आर्य ने बताया कि निष्पक्ष और गुणवत्तापूर्ण विवेचना के लिए मऊ के क्षेत्राधिकारी नगर को विवेचना दी गई है।

पीलिया, मिर्गी और टाइफायड में करा रहे झाड़फूंक...जा रही कई की जान

झांसी। बुंदेलखंड में विकास तेजी से हो रहा है। झांसी तो स्मार्ट सिटी में शुमार हो चला है। ललितपुर भी विकास की कई योजनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है लेकिन, अंधविश्वास के चलते लोग अब भी बुंदेलखंड की सौ-डेढ़ सौ साल पुरानी कु-प्रथाओं को नहीं छोड़ पा रहे। अंधविश्वास में यहां अभी भी एक बड़ी आबादी सांप के डसने, पीलिया होने, टाइफायड, मिर्गी, बुखार में दौरे और निमोनिया जैसी बीमारी में सीधे ड क्टर के पास जाने के बजाय झाड़फूंक करा रही है। और तो और छोटे बच्चों को निमोनिया होने पर उन्हें लोहे की गर्म सलाखों से दागने से निमोनिया खत्म होने पर विश्वास रखते हैं। इनकी झाड़फूंक यहीं खत्म नहीं होती, बेटे पैदा होने की चाहत में गर्भवती महिलाओं को कई तरह की बाबा बूटी और भभूत खिलाई जाती है। साथ ही ताबीज तो हर तीसरे-चौथे घर में मिल जाएंगे। आमतौर पर लोग इस पर विश्वास कर इसे पुरानी प्रथा के अनुसार इलाज करना मानते हैं, जबकि ड क्टरों का कहना है कि मरीज को झाड़फूंक नहीं सही समय पर सही इलाज की जरूरत होती है। झांसी, ललितपुर, मऊरानीपुर, मड़वरा, मौठ, ओरछा के आसपास और मध्य प्रदेश में कई जगह झाड़फूंक के बड़े-बड़े ठिकाने हैं।

मेडिकल कालेज बाल रोग विभाग के अध्यक्ष डा . ओमशंकर चौरसिया बताते हैं कि यहां बच्चों को दौरे पड़ने पर, टाइफायड होने पर और सांप के डसने पर लोग खूब झाड़फूंक कराते हैं। पीलिया होने पर भी कई दिनों तक पीलिया झड़वाते रहते हैं। वहीं सबसे बुरी झाड़फूंक तो निमोनिया की कराते हैं, इसमें बच्चों को लोहे की गर्म सलाखों से शरीर पर दाग देते हैं। जबकि झाड़फूंक से अक्सर बच्चों की हालत बिगड़ जाती है। इससे इलाज में भी देरी होती है। अक्सर समझाने पर भी परिजन नहीं मानते हैं।

जिला अस्पताल के वरिष्ठ फिजिशियन डा . डीएस गुप्ता बताते हैं कि सांप के डसने पर अधिकांश परिवार सबसे पहले झाड़फूंक कराने दौड़ते हैं। इसके अलावा मिर्गी, साइकोसिस (मनोविक्षिप्त) और बार-बार बेहोश हो जाना व उल्टी-सीधी बातें करने के केस में इसे ऊपरी चक्कर मानकर झड़वाने के लिए बाबाओं के पास पहुंच जाते हैं। कई बार तो लकवा और तेज बुखार न उतरने पर भी दवा से पहले झाड़फूंक कराते हैं। अक्सर दवा चलने के बीच में भी मरीज को झाड़फूंक कराने ले जाते हैं। सांप के डसने पर तो यहां लोग पहले झाड़फूंक कराते हैं, बाद में अस्पताल लाते हैं। इससे कई मामलों में जान तक चली जाती है। शहर की स्त्रीरोग विशेषज्ञ डा . प्रियंका सिंह बताती हैं कि बुंदेलखंड में अब भी बेटे की चाहत में महिलाएं बाबा बूटी और कई तरह के ताबीज बांधकर आती हैं। सही समय पर

इलाज की बजाय बूटी का लेप लगाती हैं। समझाने के बाद भी अक्सर लोग नहीं समझते हैं।

मानसिक रोगियों में झाड़फूंक में समय बर्बाद करना ठीक नहीं

जिला अस्पताल की मानसिक रोग विशेषज्ञ डा . शिकाफा जाफरीन बताती हैं कि सिजोफ्रेनिया के केस में तो अक्सर ही लोग झाड़फूंक के चक्कर में पड़ जाते हैं। उन्हें लगता है कि किसी ऊपरी हवा ने जकड़ लिया है इसलिए उनका मरीज उल्टी-सीधी बातें कर रहा है। जोकि सिजोफ्रेनिया के मरीज के लक्षण होते हैं। अक्सर काउंसलिंग के दौरान लोगों को बताया जाता है कि बीमार व्यक्ति को झाड़फूंक नहीं बल्कि सही समय पर दवा की जरूरत होती है। मनोचिकित्सक अमन किशोर बताते हैं कि तन या मन से बीमार व्यक्ति को समय पर इलाज न मिले तो हालत सुधरने में काफी वक्त लग सकता है। स्थिति और बिगड़ सकती है। मानसिक रोगियों में झाड़फूंक में समय बर्बाद करना बिल्कुल ठीक नहीं होता। २५ साल की एक युवती रात में उठकर घर से बाहर निकल जाती थी। वह बैठे-बैठे चीखने लगती थी। बताती थी कोई उसके पास आता है, उससे बातें करता था, उसे बाहर जाने को कहता है। घरवाले इसे प्रेत-बाधा समझकर तीन साल तक लड़की को बाबा और झाड़फूंक करने वाले के पास ले गए। उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी। जिला अस्पताल जाने पर पता चला कि वह सिजोफ्रेनिया की शिकार है। दो बच्चों की मां को एक दिन घर में काम करते वक्त सांप ने डस लिया। पति और उसके घरवाले महिला को लेकर छह-सात घंटे तक ललितपुर, मड़़ावरा और झांसी ले जाकर झाड़फूंक कराते रहे। लेकिन, जब वह मरणासन हो गई तो उसे लेकर मेडिकल कालेज पहुंचे। वहां डाक्टरों ने महिला को मृत बता दिया। जबकि परिजन डाक्टरों से उसे बचा लेने की गुहार लगाते रहे। तीन माह के छोटे से बच्चे को निमोनिया हो गया था। बुंदेलखंड में प्रचलित झाड़फूंक की प्रथा के चलते परिजनों ने बच्चे को लोहे की गर्म सलाखों से कई बार दगवाया। बच्चे के पेट में कई जगह घाव हो गए। उसकी हालत बिगड़ गई तो उसे मेडिकल क लेज में भर्ती किया गया। जहां डाक्टरों ने बड़ी मुश्किल से बच्चे की जान बनाई और परिजनों को दोबारा ऐसा करने से मना किया। ३५ साल के एक युवा को पीलिया हो गया था। बीमारी समझ में आते ही परिजन अपने बेटे को झाड़फूंक कराने के लिए झांसी, मऊरानीपुर और एरच के साथ कई जगह ले गए। जहां पीलिया की झाड़फूंक करने वालों ने उसे धागा बांधकर गले में जड़ी-बूटी की कई मालाएं पहनाईं। डेढ़ महीने तक वह लोग झाड़फूंक कराते रहे। हालत बिगड़ गई तो उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया।

100 विद्यालय एकल, दस शिक्षकों के अभाव में बंद, कैसे निपुण बनें बच्चे

एटा। कॉन्वेंट स्कूलों की बराबरी करने के क्रम में परिषदीय विद्यालयों को स्मार्ट बनाया जा रहा। इसके लिए विद्यालयों के भवन को रंग-रोगन के साथ वहां खेलकूद की व्यवस्था कर कक्षाओं को स्मार्ट बनाया जा रहा है। इस कार्य में लाखों रुपये खर्च हो रहे हैं। लेकिन शिक्षकों के अभाव से शिक्षा वहीं की वहीं ठहरी है।

जिले में १०० परिषदीय विद्यालयों में एक-एक शिक्षक हैं। इसके अलावा दस विद्यालय ऐसे हैं, जो शिक्षकों के अभाव में बंद पड़े हैं। ऐसे में बड़ा सवाल है कि छात्र निपुण कैसे बनें?

जिले में १६६१ परिषदीय विद्यालय संचालित हैं। इनमें एक लाख ३८ हजार विद्यार्थी पंजीत हैं। नियम है कि तीस विद्यार्थियों पर एक शिक्षक की तैनात होनी चाहिए।

जबकि जूनियर हाईस्कूल का मानक अलग है। यहां १०० विद्यार्थी एक विद्यालय में हो जाएं तो प्रधानाध्यापक को अलग तैनात कर दिया जाता है। जिले में परिषदीय स्कूल में शिक्षा किस कदर बदहाल है।

इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है, कि १०० विद्यालय एक-एक शिक्षक के हवाले हैं। वहीं जिले में २२५ विद्यालय जर्जर हैं। विभाग द्वारा १०४ विद्यालयों में काम शुरू कराया गया है। जबकि १८१ विद्यालय अभी भी जर्जर

हाल पड़े हैं।

3618 ड्राप आउट बच्चे हुए चिह्नित

जिले में इस वर्ष अभियान चलाकर ३४१८ ड्राप आउट विद्यार्थियों को चिह्नित किया गया है। इनमें १६४८ लड़के व १६७० लड़कियां शामिल है। जबकि बीते वर्ष २०२२ डाप आउट विद्यार्थियों को चिह्नित किया था। इसमें १४३६ लड़के व १२२५ लड़कियां शामिल थीं।

बोले शिक्षक व शिक्षाविद

शिक्षक का दायित्व शिक्षक ही पूरा करेगा। पूरी लगन से विद्यार्थियों को पढ़ाया जाए। अंतरजनपदीय तबादले पर १०० शिक्षक जा चुके हैं। इसके चलते शिक्षकों की कर्मी भी है।-

डा.ध. जितेंद्र यादव, उप शिक्षा निदेशक व डायट प्राचार्य

विद्यालयों में पूरे शिक्षकों की तैनाती होनी चाहिए। बच्चों को शिक्षित करने में शिक्षामित्रों को पूरा सहयोग करना चाहिए। साथ ही किताबें आदि समय से मिलनी चाहिए। समय से सब कार्य हों तभी शिक्षा व्यवस्था में सुधर होगा।-विजय मिश्रा, प्रधानाचार्य सर्वोदय इंटर कालेज
विद्यालयों में शिक्षा का सुधार तभी हो सकता है, जब शिक्षकों को कहीं अन्य कार्य में न लगाया जाए। शिक्षकों को दूसरे कार्य देने से शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होती है। जरूरत है कि शिक्षकों को

विद्यालयों में शिक्षण का कार्य ही करने दें।- दिनेश प्रताप सिंह, प्रधानाचार्य आर्य विद्यालय
परिषदीय विद्यालयों में सुधार तभी हो सकता है, जब शिक्षकों को अन्य कार्यों में न लगाया जाए।
अन्य कार्य शिक्षक करेंगे तो विद्यालयों में आने वाले छात्रों को कौन पढ़ाएगा। शासन व अधिकारियों को इस बात को समझकर अलग से रणनीति बनानी चाहिए। -शैलेंद्र गुप्ता, शिक्षक वर्णी जैन इंटर क लेज
आंकड़ों पर एक नजर
जिले में तैनात शिक्षक- ४४१०
तैनात शिक्षामित्र- १४२४
तैनात अनुदेशक- १२०
परिषदीय स्कूल- १६६१
ड्र प आउट विद्यार्थी- ३६१८
एकल विद्यालय- १००
बंद विद्यालय- १०
जर्जर विद्यालय- २२५
काम चलने वाले विद्यालयों की संख्या- 104
अंतरजनपदीय तबादला के दौरान बड़ी संख्या में शिक्षक जिले से गए, इसके चलते विद्यालय एकल हुए हैं। दूसरे जिलों से आए शिक्षकों को विद्यालय आवंटन करने के निर्देश मिले हैं। १८ अगस्त से आवंटन का कार्य शुरू होगा। एकल व बंद विद्यालयों में शिक्षकों की तैनाती की जाएगी। -दिनेश कुमार, बीएसए

सीएम योगी से मिले रालोद विधायक जयंत चौधरी के एनडीए में जाने की चर्चाएं तेज

लखनऊ। रालोद प्रमुख जयंत चौधरी राज्यसभा में दिल्ली बिल पर हुई वोटिंग में शामिल नहीं हुए थे। रालोद के नौ में से आठ विधायकों ने सीएम योगी आदित्यनाथ से लखनऊ में मुलाकात की। इसके बाद जयंत चौधरी के एनडीए में शामिल होने की चर्चाएं तेज हो गई हैं। राष्ट्रीय लोकदल के विधायकों ने बुधवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके सरकारी आवास पर मुलाकात की। ऐसा पहली बार हुआ है जब रालोद विधायक एक साथ सीएम से मिले हैं। ऐसे में सियासी चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है।

कहा जा रहा है कि राज्यसभा में दिल्ली बिल पर हुई वोटिंग में पहले रालोद प्रमुख जयंत चौधरी गायब रहे। अब विधायक सामूहिक रूप से सीएम से मिले। इस घटनाक्रम के सियासी मतलब निकाले जा रहे हैं। सियासी गलियारों में पहले ही जयंत के बीजेपी के साथ जाने की अटकलें चल रही हैं। ऐसे में जयंत वोटिंग में नहीं पहुंचे तो इन अटकलों को और बल मिलने लगा। चर्चा है कि जयंत भाजपा आलाकमान के संपर्क में हैं। इधर बुधवार को रालोद के नौ में से आठ विधायक सीएम से मिले। केवल गुलाम मोहम्मद शामिल नहीं हो पाए क्योंकि, उस समय सदन में उनका प्रश्न लगा था। हालांकि रालोद विधायक कहते हैं कि वे प्रदेश में बाढ़ से हुए नुकसान का मुआवजा देने, बकाया गन्ना मूल्य का भुगतान करने, गन्ना मूल्य में वृद्धि करने, किसानों को फ्री बिजली देने जैसे मामलों पर सीएम से मिले थे।



अब मात्र 55 मिनट में तय होगा वाराणसी से लखनऊ का सफर

सीएम योगी ने किया शुभारंभ



वाराणसी। विमानन कंपनी इंडिगो एयरलाइंस की वाराणसी-लखनऊ विमान सेवा गुरुवार से शुरू हो गई है। मुख्यमंत्री सीएम योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पर पहली उड़ान को हरी झंडी दिखाई। यह फ्लाइट ४.०५ बजे वाराणसी एयरपोर्ट से उड़ान भरेगी। वाराणसी के बाबतपुर स्थित लालबहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से लखनऊ की सीधी विमान सेवा गुरुवार से शुरू हो गई। सीएम योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पर पहली उड़ान के यात्रियों का स्वागत करने के बाद दोपहर विमान (६ ई७४८३) को हरी झंडी दिखाई। पर्यटन मंत्री उसी विमान से लखनऊ से बाबतपुर एयरपोर्ट आएंगे। वह यहां से लखनऊ जाने वाले यात्रियों का स्वागत करेंगे। वाराणसी से लखनऊ की दूरी ५५ मिनट में ही तय की जा सकेगी। हालांकि लखनऊ से वाराणसी पहुंचने में १.१० घंटे ही लगेंगे। लखनऊ एयरपोर्ट पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि बनारस के जनप्रतिनिधियों, उद्यमियों, व्यापारियों, विद्वत समाज और काशी विश्वनाथ धाम आने वाले श्रद्धालुओं ने लखनऊ से वाराणसी के लिए सीधे विमान सेवा की मांग कर रहे थे।

आगे उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी ने बीते नौ वर्षों में विकास की जिन ऊंचाइयों को छुआ है। उसे देखते हुए वाराणसी से लखनऊ के लिए सीधी हवाई सेवा की जरूरत बताई जा रही थी। जो कि आज शुरू हो रही है। इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं। **सप्ताह में तीन दिन उड़ान**
विमानन कंपनी इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट सप्ताह में तीन दिन (मंगलवार, गुरुवार व शनिवार) उड़ान भरेगी। फ्लाइट दोपहर २.२० बजे लखनऊ एयरपोर्ट से उड़ान भरेगी और अपराह्न ३.१० बजे वाराणसी एयरपोर्ट पहुंचेगी। यही फ्लाइट ४.०५ बजे वाराणसी एयरपोर्ट से उड़ान भरेगी और शाम ५ बजे लखनऊ एयरपोर्ट पहुंच जाएगी। वाराणसी से लखनऊ के बीच का बेसिक किराया २५००-३००० रुपये के बीच तय हुआ है, लेकिन फ्लाइट का किराया फ्लैक्सि होता है। सीटों की बुकिंग के साथ ही किराया बढ़ता और घटता रहता है। विमानन कंपनी के अधिकारियों के मुताबिक, पहली उड़ान से लिए ही अच्छी बुकिंग हुई है। यात्रियों की संख्या बढ़ी तो फ्लाइट का परिचालन नियमित कर दिया जाएगा। वाराणसी से लखनऊ के बीच अच्छा एयर ट्रैफिक मिलने की उम्मीद है।

डूब क्षेत्र में रसूख के आगे बौने हुए नियम अरबों रुपये की सरकारी जमीन पर हो गए कब्जे

आगरा। आगरा के डूब क्षेत्र में रसूख के आगे नियम बौने दिखाई दे रहे हैं। यहां अरबों रुपये की सरकारी जमीन पर कब्जा कर लिया गया। प्रशासन सिर्फ नोटिस देता रहा, इन्हें रोक नहीं सका। ताजनगरी आगरा के डूब क्षेत्र में रसूख के आगे नियम-कायदे तार-तार हैं। प्रशासन के लचर रवैये से डूब क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अवैध कब्जों का 'खेल' चल रहा है। बाईपुर से लेकर नगला बूढ़ी, सिकंदरपुर, खासपुर, बल्केश्वर तक करीब १५ किमी. डूब क्षेत्र में अरबों रुपये की सरकारी भूमि लापरवाही की भेंट चढ़ गई है।

दयालबाग क्षेत्र में आठ से अधिक गांव में एहतमाली भूमि है। राजस्व रिकॉर्ड में जलमग्न दर्ज है। नदी ने धारा क्या बदली, ग्राम सभा से लेकर डूब क्षेत्र तक भूमाफिया सक्रिय हुए। नतीजा २०१४ से २०२३ तक ५०० से अधिक अवैध निर्माण व कब्जे हो गए। सिंचाई व नहर की भूमि तक नहीं बची। हद तो तब हुई जब एडीए ने डूब क्षेत्र में बिना एनओसी नक्शे तक पास कर दिए। दुकान, मकान, फार्म हाउस से लेकर अपार्टमेंट तक खड़े हो चुके हैं। अदालत के आदेश पर २०१६ में एडीए ने तीन अपार्टमेंट में फ्लैट ध्वस्त किए थे। पिछले चार साल से डूब क्षेत्र में एक भी कार्रवाई नहीं की गई। न अवैध निर्माण व कब्जों को खाली करने के लिए प्रशासन ने नोटिस दिए न कोई सर्वे कराया।

उल्टे पांव लौट आते हैं अफसर



दयालबाग क्षेत्र में हो रहे अवैध निर्माणों की शिकायत पर जांच के लिए जाने वाले अफसर उल्टे पांव लौट आते हैं। पोड़या घाट पर हुए अवैध निर्माण मामले में भी यही हुआ। राधास्वामी सत्संग सभा ने प्रशासन की रोक के बावजूद अवैध निर्माण नहीं रोका।

वर्षों से कोर्ट में लंबित मामले

राधास्वामी सत्संग सभा पर जिन जमीनों पर कब्जे का आरोप लगा। उनमें प्रशासन ने तत्काल कार्रवाई नहीं की। कब्जा होने के बाद १० से अधिक मामले विभिन्न अदालतों में वर्षों से लंबित हैं। जिनमें प्रशासन की पैरवी भी लचर है। एक भी कब्जा प्रशासन मुक्त नहीं कर सका है।

कब्जे जिन्हें नहीं रोक सका प्रशासन

दयालबाग टेनरी से जगनपुर के लिए लिंक रोड पर ३० फुट चौड़े रास्ते में पक्की दीवार खड़ी कर कब्जा हो चुका

है। राधाबाग के पीछे डीपीएस स्कूल लिंक रोड पर ४६० मीटर लंबे रास्ते पर पक्की दीवार खड़ी कर अवैध निर्माण हुए। पोड़या घाट को मुगल रोड से लिंक करने वाले २० फुट चौड़ी नहर पट्टी की सिंचाई भूमि को खेतों में जोत लिया। सिकंदरपुर में यमुना किनारे तक दो स्कूल व कालेज, फार्म हाउस, गोदाम और अवैध प्लॉट काट मकान बन रहे हैं।

सिकंदरा स्मारक के पीछे मौजा बाईपुर में राजस्व की १५० बीघा से अधिक रेत भूमि पर अवैध रूप से खेती हो रही है।

भेजे जाएंगे नोटिस

जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल ने कहा कि यमुना डूब क्षेत्र में हुए कब्जों का सर्वे हो रहा है। नोटिस भेजे जाएंगे। कानूनी प्रक्रिया के तहत निर्माणों को हटाया जाएगा। राधास्वामी सत्संग सभा मामले में पैरवी होगी।

बेटे-पोती को बनाया बंधक, बुजुर्ग दंपती पर बरसाई गोलियां

मेरठ। मेरठ के ब्रह्मपुरी में बदमाशों ने घर में घुसकर दिनदहाड़े पति-पत्नी पर बदमाशों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दीं। हमले में पति की मौत हो गई जबकि पत्नी घायल है। दो बदमाश सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं। पुलिस जांच पड़ताल में जुटी है। मेरठ के ब्रह्मपुरी थाना क्षेत्र के गौरीपुरा पुलिस चौकी से ५० मीटर की दूरी पर किशनपुरा में बदमाशों ने दिनदहाड़े तकरीबन एक घंटा घर में घुसकर आतंक मचाया। बदमाशों ने स्पोर्ट्स कारोबारी डीके जैन और उनकी पत्नी अंजू जैन पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। फायरिंग में पति की मौत पर ही मौत हो गई जबकि अंजू जैन गंभीर रूप से घायल हैं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मौके पर कई थाने की पुलिस पहुंची और जांच पड़ताल की। जानकारी के मुताबिक ब्रह्मपुरी के गौरीपुरा पुलिस चौकी से १०० मीटर की दूरी पर गुरुवार सुबह करीब ८ बजे बदमाशों ने घर में घुसकर बुजुर्ग दंपति को गोली मार दी। हमले में स्पोर्ट्स कारोबारी धनकुमार जैन (७०) की मौत हो गई है। उनकी पत्नी अंजू जैन (६५) की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्हें केएमसी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पड़ोसी ने बताया कि दो नकाबपोश बदमाशों ने घटना को अंजाम



दिया है। बदमाशों ने पहले कारोबारी के छोटे बेटे और पोती को कमरे में बंधक बना लिया। फिर उस के बाद लूटपाट की घटना को अंजाम दिया। जब बुजुर्ग दंपती ने विरोध किया तो उन को गोली मार दी गई। घटना ब्रह्मपुरी थाना क्षेत्र

की है। मौके पर आईजी नचिकेता झा, एसएसपी रोहित सिंह सजवाण, एसपी सिटी पीयूष सिंह भी पुलिस बल के साथ मौजूद हैं। बताया जा रहा है कि में दो हमलावर सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं। पुलिस के सीसीटीवी मुताबिक किसी करीबी ने ही घटना को अंजाम दिया है। पड़ोसी संजय कुमार ने बताया कि पूरी घटना सुबह आठ बजे की है।

बताया गया कि दो नकाबपोश बदमाश आए और घर में घुस गए। उन्होंने व्यापारी धनकुमार जैन और उनकी पत्नी अंजू जैन को बेडरूम में घुसकर गोली मार दी। हालांकि बदमाश यहां कैसे आए यह अभी पता नहीं चल सका है। बदमाशों ने लूटपाट भी है। बदमाश तकरीबन एक घंटा घर के भीतर रहे और वारदात को अंजाम दिया। जिस वक्त घटना हुई उस वक्त घर पर व्यापारी का छोटा बेटा, पोती और दंपती ही थे। बदमाशों ने घर में घुसते ही सबसे पहले छोटे बेटे को बंधक बनाया। इसके बाद पोती को गन प्वाइंट पर ले लिया। दंपती के कमरे में बदमाश घुसे तो उन्होंने विरोध किया जिसके बाद बदमाशों ने दोनों पर गोलियां बरसा दीं। हमले में व्यापारी की मौत हो गई जबकि पत्नी घायल हो गई।

पूर्व केंद्रीय मंत्री अरविंद नेताम ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा

रायपुर। छत्तीसगढ़ से इस वक्त की बड़ी खबर सामने आ रही है। पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ आदिवासी नेता अरविंद नेताम ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को भेज दिया है। छत्तीसगढ़ से इस वक्त की बड़ी खबर सामने आ रही है। पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ आदिवासी नेता अरविंद नेताम ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को भेज दिया है। उन्होंने ६ अगस्त को ही अपना इस्तीफा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पीसीसी चीफ दीपक बैज को भेजा दिया था।

क्या लिखा है खत में

भेजे इस्तीफे में उन्होंने लिखा है कि मैं कांग्रेस पार्टी का क्रियाशील सदस्य हूँ। ५ वर्ष पूर्व तत्कालीन अध्यक्ष राहुल गांधी के आह्वान पर कांग्रेस में वापस आकर अपने अनुभव से पार्टी को मजबूती प्रदान करने का हमेशा प्रयास किया, लेकिन प्रदेश नेतृत्व के असहयोगपूर्ण रवैये के कारण मुझे निराशा हुई। प्रदेश सरकार राज्य में आदिवासी समाज के लिए बाबा साहब ड. भीमराव अंबेडकर के द्वारा प्रदान सवैधानिक अधिकारों के विपरीत काम कर रही है। उन्होंने लिखा कि कांग्रेस सरकार ने पेसा कानून १९६६ में आदिवासी समाज को जल,

जंगल, जमीन पर ग्रामसभा के अधिकारों को समाप्त कर दिया है। इस तरह से ये आदिवासी विरोधी सरकार है, इसलिए मैं विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से त्याग पत्र दे रहा हूँ। केन्द्रीय नेतृत्व से मुझे हमेशा मार्गदर्शन और आशीर्वाद मिलता रहा है, उसके लिए पार्टी का आभार व्यक्त करता हूँ।

जानें कौन हैं अरविंद नेताम?

अरविंद नेताम सर्व आदिवासी समाज के संरक्षक हैं। वो इंदिरा गांधी और नरसिम्हा राव की सरकार में मंत्री रह चुके हैं। वो इंदिरा गांधी की सरकार में कृषि राज्य मंत्री का दायित्व संभाल चुके हैं। पहली बार १९६६ में उन्हें कांग्रेस से निकाला गया था। अरविंद नेताम ४ बार के सांसद रह चुके हैं। वो छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ आदिवासी नेता हैं। बस्तर संभाग में आदिवासियों के बीच उनका अच्छा खासा प्रभुत्व है। बस्तर की राजनीति में वो अच्छी खासी पैठ रखते हैं। विधानसभा चुनाव नजदीक हैं, ऐसे में वह कांग्रेस के चुनावी गणित को प्रभावित कर सकते हैं। इसके पूर्व उन्होंने बस्तर की १२ सीटों सहित कुल ५० सीटों पर आदिवासी समाज से प्रत्याशी उतारने की घोषणा की थी। इसके बाद से ही कयास लग रहे थे कि वह कांग्रेस छोड़ सकते हैं। फिलहाल, वो रायपुर में रह रहे हैं।



“BJP वाले चाहते हैं आप जंगल से बाहर न निकलो। आपके बच्चे न पढ़ें। आप इस देश के मालिक हो। आपको आपका हक मिलना चाहिए। आपके हाथों से हक छीनकर अडानी को पकड़ा दिए जाते हैं। उनका एक ही मकसद है कि आप जंगलों में रहो।”

आदिवासियों से बात करते हुए राहुल का BJP पर वार

‘यह अविश्वास नहीं’, बल्कि विपक्षी इंडिया के लिए विश्वास दस्ताव, लोकसभा में बोलीं महुआ मोइत्रा



नई दिल्ली। महुआ मोइत्रा ने कहा कि उन्होंने कहा कि मुझे समझ नहीं आता कि पीएम मोदी इस सदन में क्यों नहीं आते, जहां के लिए वे चुने गए हैं। यह सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नहीं है। यह विपक्षी इंडिया के लिए विश्वास प्रस्ताव है। मोदी सरकार गुरुवार यानी आज अपने दूसरे कार्यकाल में पहले अविश्वास प्रस्ताव का सामना कर रही है। लोकसभा में टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री थोड़ी न आपकी बैठकर सुनेंगे। वे आखिरी दिन आएंगे और आपकी धजियां उड़ाकर जाएंगे। उन्होंने कहा कि मुझे समझ नहीं आता कि पीएम मोदी इस सदन में क्यों नहीं आते, जहां के लिए वे चुने गए हैं। यह सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नहीं है। यह विपक्षी इंडिया के लिए विश्वास प्रस्ताव है। मोइत्रा ने कहा कि हम यहां अपने तुम अभी चुप रहो गणतंत्र में सवाल पूछने आए हैं, जहां प्रधानमंत्री एक राज्यपाल से कहते हैं चुप रहो। इस सदन में निर्वाचित सांसद के रूप में हमसे नियमित रूप से कहा जाता है चुप रहो। यह प्रस्ताव मणिपुर में इस मौन संहिता को तोड़ने के लिए है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी हमारी बात नहीं सुनेंगे, आखिरी दिन आकर भाषण देंगे। खैर कोई नहीं हमें इसका इंतजार है। हम इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं पता कि इससे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण क्या है, हमारे प्रधानमंत्री ने संसद में आने से इनकार कर दिया या उन्होंने मणिपुर जाने से इनकार कर दिया।

बाजार में बिक रही हैं असली के नाम पर नकली दवाइयां इन तरीकों से करें उनकी वास्तविकता की जांच

नई दिल्ली। किसी प्रकार की गंभीर बीमारी होने पर हम डाक्टर के पास जाते हैं। डाक्टर हमारी बीमारी की जांच करने के बाद उसके ठीक होने के लिए दवा लिखता है। उन दवाओं को हम मेडिकल स्टोर से खरीदते हैं। वहीं अगर हम आपसे कहें कि देश में कई जगहों पर असली के नाम पर नकली दवाइयां बेची जा रही हैं? ऐसे में आप क्या कहेंगे। इन नकली दवाओं का सेवन करने से आपके शरीर में कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो सकती हैं। ऐसे में अगर आप भी मेडिकल स्टोर से दवाओं को खरीदने जा रहे हैं। इस स्थिति में आपको सावधान हो जाने की जरूरत है। आपकी जरा सी लापरवाही एक बड़े नुकसान की वजह बन सकती है। इसी कड़ी में आज हम इस खबर के माध्यम से उन तरीकों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनकी मदद से आप असली और नकली दवाओं की पहचान कर सकते हैं। आपको इस बारे में पता होना चाहिए जो असली दवाएं होती हैं। उन पर एक खास तरह का यूनिफ कोड प्रिंट किया जाता है। इस कोड में दवा की मैनुफैक्चरिंग से लेकर पूरी सप्लाई चेन की जानकारी होती है। इस कारण आप जब मेडिकल स्टोर पर अपनी दवाओं को खरीद रहे हैं। ऐसे में उस दौरान दवाओं पर बने क्यूआर कोड को स्कैन जरूर करें। इससे आपको दवाओं के बारे में पूरी जानकारी मिल जाएगी। स्कैन करके आप दवा की वास्तविकता के बारे में पता कर सकते हैं। किसी भी मेडिकल स्टोर से दवा खरीदने के बाद उसको अपने डक्टर को जरूर दिखाएं। आपका डक्टर दवा देखने के बाद इस बारे में आसानी से



पता लगा लेगा कि दवा असली है या नकली। इसके अलावा आपको दवा उन्हीं मेडिकल स्टोर से खरीदनी चाहिए जो लंबे समय से दवाओं की बिक्री करते आ रहे हैं। दवा को खरीदते समय इस बात का ध्यान जरूर दें कि उसकी पैकेजिंग कैसे की गई है? अगर दवा की पैकेजिंग ठीक ढंग से नहीं की गई है। ऐसे में इस बात की बड़ी संभावना है कि दवा नकली है।

एमपीसी के सभी सदस्य ब्याज दरों को स्थिर रखने के पक्ष में

आरबीआई ने रेपो रेट में नहीं किया कोई बदलाव

6.50% पर रखा बरकरार

रेपो दर	स्थायी जमा सुविधा दर	सीमांत स्थायी सुविधा दर	बैंक दर
6.5% पर अपरिवर्तित	6.25% पर बरकरार	6.75% पर बरकरार	6.75% पर बरकरार

जुलाई-सितंबर 2023	अक्टूबर-दिसंबर 2023	जनवरी-मार्च 2024	अप्रैल-जून 2024
के लिए मुद्रास्फीति का अनुमान 5.2% से बढ़कर 6.2% किया	के लिए सीपीआई सुनुस्फीति का अनुमान 5.4% से बढ़कर 5.7% किया	के लिए सीपीआई सुनुस्फीति का अनुमान 5.2% पर बरकरार रखा गया	के लिए सीपीआई सुनुस्फीति का अनुमान 5.2% आंका गया

RBI का जीडीपी पर अनुमान

आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास का कहना है कि 2023-24 के लिए जीडीपी वृद्धि का अनुमान 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखा गया है।

अप्रैल-जून 2023 के लिए जीडीपी वृद्धि का अनुमान 8.0 प्रतिशत
जुलाई-सितंबर 2023 के लिए जीडीपी वृद्धि का अनुमान 6.5 प्रतिशत
अक्टूबर-दिसंबर 2023 के लिए जीडीपी अनुमान 6.0 प्रतिशत
जनवरी-मार्च 2024 के लिए जीडीपी अनुमान 5.7 प्रतिशत

आरबीआई क्रेडिट पॉलिसी की मुख्य 5 बातें
1 रेपो रेट लगातार तीसरी बार 6.50 फीसदी पर अपरिवर्तित रखा
2 वित्त वर्ष 2024 के लिए जीडीपी अनुमान 6.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा
3 2023-24 के लिए सीपीआई सुनुस्फीति का अनुमान 5.1 प्रतिशत से बढ़कर 5.4 प्रतिशत किया गया
4 पॉलिसी स्पष्ट 'Withdrawal of Accommodation' पर अपरिवर्तित रखा
5 हमपीसी सुनुस्फीति पर बजट रूढ़ि और मुद्रास्फीति को लक्षित स्तर पर लाने की अपनी प्रतिबद्धता पर दृढ़ रहेगी

दिल्ली। एमपीसी की बैठक के दौरान सभी सदस्य सर्वसम्मति से ब्याज दरों को स्थिर रखने के पक्ष में रहे। उन्होंने यह भी बताया कि ग्लोबल स्तर पर ब्याज दरें लंबे समय तक बनी रहेंगी। आरबीआई गवर्नर ने कहा कि ग्लोबल इकोनॉमी में महंगाई और कर्ज की चुनौतियां कायम हैं। आरबीआई गवर्नर ने कहा कि दूसरे देशों की तुलना में भारत आर्थिक चुनौतियों से निपटने में अधिक

सक्षम है। रेपो रेट ६.५ प्रतिशत पर बना रहेगा, एमपीसी की बैठक के बाद आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने इसका एलान कर दिया है। उन्होंने कहा कि बैंक मजबूत हैं। एनपीए घटा है। क रपोरेट बैलेंस शीट मजबूत हुए हैं। भारत के मजबूत मैक्रोइकोन मिक् फंडामेंटल बने हुए हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में मजबूती बनी हुई है।

आरबीआई गवर्नर ने कहा है कि सब्जियों की कीमत बढ़ने से महंगाई पर असर पड़ा है। जुलाई अगस्त में महंगाई बढ़ने का अनुमान है। एमपीसी की बैठक के बाद बोलते हुए आरबीआई गवर्नर ने बताया है कि रिजर्व बैंक ने कर्जदारों को निश्चित ब्याज दर व्यवस्था अपनाने की अनुमति देने की रूपरेखा का प्रस्ताव किया है। उन्होंने बताया कि एमपीसी की बैठक के दौरान सभी

सदस्य सर्वसम्मति से ब्याज दरों को स्थिर रखने के पक्ष में रहे। उन्होंने यह भी बताया कि ग्लोबल स्तर पर ब्याज दरें लंबे समय तक बनी रहेंगी। आरबीआई गवर्नर ने कहा कि ग्लोबल इकोनॉमी में महंगाई और कर्ज की चुनौतियां कायम हैं। आरबीआई गवर्नर ने कहा कि दूसरे देशों की तुलना में भारत आर्थिक चुनौतियों से निपटने में अधिक सक्षम है।

वायरल हुआ वीडियो

वीडियो में शिव और डेजी मुंबई में स्टारबक्स क फी शाप से बाहर आते हुए नजर आ रहे हैं। दोनों जैसे ही बाहर निकले शिव को उनके नन्हें फैंस ने घेर लिया। एक्टर ने भी उन्हें निराश नहीं किया और डेजी शाह के साथ मिलकर सेल्फी क्लिक की।

शिव ने फिर जीता फैंस का दिल

क फी शाप से निकलने के बाद डेजी शाह और शिव ठाकरे जैसे ही कार में बैठे दोनों को बच्चों ने फिर से घरे लिया। इसके बाद अपने बैग से कुछ पैसे दिए। इतने एक बच्चा उनके हाथ से पैसे छीनकर भागने लगा तो शिव ने समझाया कि छीनने की जरूरत नहीं, आराम से इंतजार करो जब तक सामने वाला कुछ दे रहा है।

सोशल मीडिया पर हुई तारीफ

शिव ठाकरे के इस सादेपन के लिए फैंस ने उनकी तारीफ भी की। वीडियो पर कमेंट करते हुए एक यूजर ने कहा, दोनों बच्चों के साथ बात करते हुए क्यूट लग रहे हैं। मुझे ये देखकर अच्छा लगा। दोनों हमेशा खुश रहो। एक अन्य यूजर ने कहा, कितनी शांत है, कोई और होता तो पारा ही हाई हो जाता उसका।

काफी डेट पर हुए स्पाट

वहीं, अब शिव ठाकरे और डेजी शाह का एक वीडियो सामने आया है, जो अफेयर की अफवाहों को हवा दे रहा है। दरअसल, शिव ठाकरे और डेजी शाह काफी डेट पर स्पाट हुए। सोशल मीडिया पर शिव ठाकरे और डेजी शाह का एक वीडियो वायरल हो रहा है।

शिव ठाकरे की इस खूबसूरत एक्ट्रेस संग बढ़ी नजदीकियां

शिव ठाकरे भले ही बिग बास सीजन 16 जीत ना पाए हो लेकिन उनकी फैन फालोइंग किसी विनर से कम नहीं है। इन दिनों शिव स्टंट बेस्ड रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी 13 में नजर आ रहे हैं। जहां उन्हें एक खास दोस्त मिल गई है। शिव अपनी इस खास दोस्त के साथ हाल ही में काफी डेट पर स्पाट हुए।

नई दिल्ली, एजेंसी। बिग बास 96 सेंसेशन शिव ठाकरे इन दिनों खतरों के खिलाड़ी 93 को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। केकेके 93 में शिव अक्सर मस्ती करते हुए नजर आते हैं। शो में उन्होंने कुछ खास दोस्त भी बना लिए हैं, लेकिन उनकी शो की एक्ट्रेस सबसे ज्यादा नजर आ रही है। शिव ठाकरे को लेकर हाल ही में खबर आई थी कि खतरों के खिलाड़ी 93 की कंटेस्टेंट डेजी शाह के साथ उनकी अच्छी ब न्डिंग हो गई है। दोनों अक्सर मीडिया पर साथ घूमते- फिरते स्प ट होते हैं। कुछ दिनों पहले इनके अफेयर की खबरें भी सुनने को मिली थी। अब इस बात में कितनी सच्चाई है ये तो शिव और डेजी ही बता सकते हैं।



मेरा बेटा मुन्ना फिल्मों में आने वाला है

दिल्ली, एजेंसी। निर्माता, निर्देशक फरहान अख्तर की बनाई डान ' सीरीज की पहली फिल्म साल 2006 में रिलीज हुई और अब वह 'डान 3' बनाने जा रहे हैं, रणवीर सिंह के साथ। शाहरुख खान अभिनीत 'डान' जब रिलीज होने ही वाली थी तो मैं यहां वहां पता लगाकर एक दिन मुंबई के गोरेगांव पश्चिम में एस वी रोड स्थित सहारा वन चोइनल के दफ्तर पहुंच गया। साल 94-95 में 92 मई के दिन रिलीज हुई अमिताभ बच्चन अभिनीत फिल्म 'डान' के निर्देशक चंद्रा बारोट उन दिनों वहीं काम करते थे। अमिताभ बच्चन से तब भी उनकी बातें होती रहती थीं। इस फिल्म को लेकर चंद्रा बारोट से उस दिन लंबी बातें हुईं।

सामूहिक मदद का अनोखा उदाहरण

बहुत कम लोगों को पता है कि चंद्रा बारोट अपना फिल्मी गुरु निर्माता, निर्देशक, अभिनेता मनोज कुमार को मानते थे। मनोज कुमार की ही फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के सेट पर फिल्म 'डान' का बीज बोया गया। फिल्म के सिनेमैटोग्राफर नरीमन ईरानी ने एक दिन ब्रेक में अपनी कुछ भरी कहानी फिल्म के कलाकारों अमिताभ बच्चन, जीनत अमान आदि को सुनाई। साथ में मनोज कुमार के असिस्टेंट चंद्रा भी बैठे थे। सबने मिलकर नरीमन ईरानी की मदद करने का फैसला किया। फिल्म की कहानी के लिए नरीमन की हेयर ड्रेसर पत्नी ने अपनी मालकिन वहीदा रहमान से गुजरातिश की कि वह जरा सलीम-जावेद से सिफारिश कर दें।

जितेंद्र ने सुझाया अमिताभ का नाम

वो जमाना सलीम-जावेद का था। दोनों दनादन स्क्रिप्ट्स लिखते रहते थे। फिल्में उन पर बनें या ना बनें। ऐसी ही तमाम जगहों से रिजेक्ट हो चुकी एक स्क्रिप्ट उन्होंने नरीमन ईरानी को पकड़ा दी और इसी स्क्रिप्ट पर बनी फिल्म 'डान'। फिल्म में पहले पहल जितेंद्र को लेने की बात चली लेकिन वह पहले से ही छह फिल्में कर रहे थे और निर्माताओं की तरफ से लगी सीलिंग के चलते वह सातवीं फिल्म साइन नहीं कर सकते थे। जितेंद्र ने ही चंद्रा बारोट को अमिताभ बच्चन का नाम सुझाया और इसके लिए अमिताभ बच्चन को फोन भी कर दिया।

रिलीज से पहले ही चल बसे नरीमन ईरानी

अमिताभ बच्चन उन दिनों मल्टीस्टारर फिल्में ही ज्यादा किया करते थे। एंग्री यंग मैन का ठप्पा लगने के बाद 'डान' उनकी पहली सोलो एक्शन फिल्म थी। ऐसे में चंद्रा बारोट कौन है, कोई पूछता तक नहीं था। चंद्रा ने बताया, 'किसी काम को शुरू करने के पीछे की नीयत ही उस काम की नियति बन जाती है।

ऐसा मेरा पक्का मानना रहा है। हमने ये फिल्म नरीमन ईरानी की मदद करने के लिए बनाई थी। सुनील दत्त के साथ उन्होंने एक फिल्म बनाई थी 'जिंदगी जिंदगी', उसके फल प हो जाने से उनके ऊपर कर्ज काफी बढ़ गया था। कैमरामैन की नौकरी करके वह इसे चुका नहीं सकते थे। तो हम सबने मिलकर उनका हौसला बढ़ाया कि वह एक और फिल्म प्रोड्यूस करें ताकि उसके मुनाफे से उनका कर्ज उतारा जा सके। फिल्म ब्लाकबस्टर हुई। ये और बात है कि फिल्म को बनने में करीब चार साल लग गए। रिलीज से पहले नरीमन ईरानी भी एक हादसे में चल बसे, लेकिन हम लोगों ने फिल्म का सारा मुनाफा ले जाकर उनकी पत्नी सलमा को दे दिया और उन्होंने नरीमन का पाई पाई कर्जा चुका दिया।

नई नागिन बनने से पहले एक्ट्रेस ने बिग बास में वसूली

मोटी फीस

मुम्बई, एजेंसी। 9 के लिए एकता कपूर को नई नागिन मिल गई है। इस नागिन के नाम के खुलासे के बाद प्रियंका चाहर चौधरी का नाम लगातार सुर्खियां बटोर रहा है। इतन ही नहीं एक्ट्रेस की फीस भी लोगों को हैरान कर रही है। लेकिन क्या आपको पता है प्रियंका ने बिग बास सीजन 96 में भी मेकर्स से तगड़ी फीस वसूली है। एकता कपूर की नई नागिन प्रियंका चाहर चौधरी को लेकर हर तरफ चर्चा हो रही है। प्रियंका की पापुलैरिटी बिग बास सीजन 96 से बढ़ी। शो में प्रियंका के खेल को उस वक्त लोगों ने काफी पसंद किया था। यहां तक कि उन्हें उस वक्त ही हाईएस्ट पेड एक्ट्रेस भी कहा गया। जानिए एकता कपूर की नागिन बनने से पहले प्रियंका चाहर चौधरी ने बिग बास सीजन 96 में मेकर्स से घर में रहने के लिए कितनी रकम वसूली।

प्रियंका चाहर चौधरी ने बिग बास सीजन 16 में खूब नाम कमाया। शो की शुरुआत से ही एक्ट्रेस दमदार दावेदार मानी जा रही थी लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। एक्ट्रेस फिनाले में पहुंचीं। यहां तक कि टाप 3 में भी पहुंचीं लेकिन टाप 2 में जगह नहीं बना पाई थी और बाहर हो गई थीं। एक्ट्रेस भले ही शो की ट्राफी अपने नाम नहीं कर पाई थीं लेकिन लोगों के दिलों में जरूर बस गई।

प्रियंका की पापुलैरिटी बिग बास सीजन 16 से बढ़ी। शो में प्रियंका के खेल को उस वक्त लोगों ने काफी पसंद किया था। यहां तक कि उन्हें उस वक्त ही हाईएस्ट पेड एक्ट्रेस भी कहा गया।



प्रियंका चाहर चौधरी

निया का एकमात्र क्रिकेटर, जिसने खेला देश का पहला और 100वां टेस्ट, 2 दशक तक किया क्रिकेट पर राज

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी

भारत की पाकिस्तान पर
65वीं जीत

अंतिम लीग मुकाबले में
4-0 से हराया



सूर्यकुमार यादव ने लगाया छकों का शतक

टी20 में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले भारतीय



रोहित शर्मा
182



विराट कोहली
117



सूर्यकुमार
101



भारत की जीत के बावजूद ट्रेल हुए हार्दिक पांड्या

तिलक वर्मा (49 रन) को नहीं बनाने दिया अर्धशतक



फैंस को फिर याद आए धोनी



क्रिकेट अनिश्चितताओं से भरा एक खेल है। इस खेल में कब क्या हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता है। रातोंरात किस खिलाड़ी की किस्मत चमक जाए ये किसी को नहीं पता रहता है। इस खेल में अब तक कई ऐसे खिलाड़ी देखे गए हैं जिन्होंने अपने टैलेंट के दम पर ऐसे रिकार्ड्स बनाए हैं जो हमेशा-हमेशा के लिए अमर रहेंगे।

नई दिल्ली, स्पोर्ट्स डेस्क। क्रिकेट अनिश्चितताओं से भरा एक खेल है। इस खेल में कब क्या हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता है। रातोंरात किस खिलाड़ी की किस्मत चमक जाए ये किसी को नहीं पता रहता है। इस खेल में अब तक कई ऐसे खिलाड़ी देखे गए हैं, जिन्होंने अपने टैलेंट के दम पर ऐसे रिकार्ड्स बनाए हैं जो हमेशा-हमेशा के लिए अमर रहेंगे, लेकिन क्या आपको पता है एक खिलाड़ी एक भी है, जिन्होंने अपने देश के लिए पहला और 900 टेस्ट मैच खेला। दुनिया में ये खिलाड़ी एकलौता ऐसा प्लेयर है, जिसने ये अनमोल उपलब्धि हासिल की।

ये और कोई नहीं, श्रीलंका के पूर्व कप्तान अर्जुन रणतुंगा ही है। दरअसल, श्रीलंका के पूर्व कप्तान अर्जुन रणतुंगा का जन्म 9 दिसंबर, 1963 में गम्पाहा, सीलोन (श्रीलंका) में एक राजनीतिक परिवार में हुआ था। अर्जुन श्रीलंका के जाने-माने राजनेता रेगी के बेटे हैं। राजनीति परिवार से ताल्लुक रखने वाले इस प्लेयर ने क्रिकेट में भी अपने नाम कई उपलब्धियां हासिल की।

90 साल की उम्र में रणतुंगा ने कोलंबो में श्रीलंका के लिए पहला टेस्ट मैच खेला था। उस मैच में उन्होंने 58 रन बनाए थे और वह इस तरह टेस्ट मैच में पहला अर्धशतक ठोकने वाले पहले श्रीलंकाई बने। इसके साथ ही उन्होंने आज ही के दिन यानी 90 अगस्त को श्रीलंका के लिए 900वां टेस्ट मैच खेला। वह दुनिया में एकमात्र ऐसे क्रिकेटर बने, जिन्होंने अपने देश के लिए पहला और 900वां टेस्ट मैच खेला।

10 अगस्त को खेला था टेस्ट का आखिरी मैच

बता दें कि 6 अगस्त से 9 अगस्त तक कोलंबो के सिंहली स्पोर्ट्स क्लब में दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के बीच तीसरा टेस्ट मैच खेला गया। इस दौरान पहली पारी में दक्षिण अफ्रीका ने 296 रन बनाए थे। इसके जवाब में श्रीलंका ने 62.2 ओवर खेलते हुए 257 रन बनाए। सलामी बल्लेबाज सनथ जयसूर्या दूसरी पारी में श्रीलंका के प्रमुख खिलाड़ी रहे, जिन्होंने 15 रनों की पारी खेली। ये मैच रणतुंगा का आखिरी टेस्ट रहा, जिसमें उन्होंने नाबाद 27 रन बनाए। हालांकि, मैच ड्रा पर समाप्त हुआ था।

वनडे वर्ल्ड कप में दिखेंगे दिनेश कार्तिक विकेटकीपर ने खुद ट्वीट कर किया दावा

भारत के एक और विकेटकीपर बल्लेबाज ने ट्वीट कर सभी फैंस को चौंका दिया है। कार्तिक का दावा है कि वह 2023 वनडे विश्व कप के दौरान जरूर दिखेंगे।

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत में पांच अक्टूबर से वनडे विश्व कप की शुरुआत होगी। इसके लिए सभी टीमें तैयारियों में जुट गई हैं। टूर्नामेंट में 90 टीमें खेलेंगी। कुल 90 वेन्यू पर 82 मैच खेले जाएंगे। पहला मैच पांच नवंबर को डिफेंडिंग चौपियंस इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। वहीं, फाइनल मुकाबला 9 अक्टूबर को अहमदाबाद में ही खेला जाएगा। भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत आठ अक्टूबर को चेन्नई में अस्ट्रेलिया के खिलाफ करेगी।

हालांकि, अब तक टीम इंडिया अपनी टीम को लेकर उलझन में है। भारत के कई खिलाड़ी चोटिल हैं, इनमें से दो मुख्य विकेटकीपर बल्लेबाज शामिल हैं। केएल राहुल और ऋषभ पंत अब तक टीम में वापसी नहीं कर सके हैं। हालांकि, माना जा रहा है कि राहुल वर्ल्ड कप तक फिट हो जाएंगे। हालांकि, इस पर बीसीसीआई ने कोई पुष्टि नहीं की है। वर्ल्ड कप से पहले भारत को एशिया कप खेलना है। इसी टूर्नामेंट से टीम इंडिया की तैयारियों का पता चल जाएगा। बीसीसीआई ने अब तक न तो एशिया कप और न ही वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम की घोषणा की है। कई खिलाड़ियों की उपलब्धता को लेकर अभी भी संशय की स्थिति बरकरार है। राहुल के अलावा श्रेयस अय्यर भी चोटिल चल रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पांच सितंबर तक बीसीसीआई टीम का एलान कर सकता है। हालांकि, सबसे बड़ी चिंता का विषय विकेटकीपर को लेकर है। पंत की गैरमौजूदगी में चर्चा इस बात को लेकर है कि क्या राहुल फिट हो पाएंगे?

अगर वह भी नहीं खेलते हैं तो ईशान किशन और संजू सैमसन में से कौन वर्ल्ड कप के लिए चुना जाएगा। इन सभी संशय के बीच भारत के एक और विकेटकीपर बल्लेबाज ने ट्वीट कर सभी फैंस को चौंका दिया।

दरअसल, एक फैन ने ट्वीट कर पूछा था- भारत का विकेटकीपर कौन होगा? इस पर टीम इंडिया से बाहर चल रहे विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने जवाब दिया। फैन के ट्वीट पर जवाब देते हुए कार्तिक ने एक और ट्वीट किया। उन्होंने लिखा- आप मुझे वर्ल्ड कप में जरूर देखेंगे। इससे ज्यादा मैं और क्या कह सकता हूं। इसके साथ ही कार्तिक ने आंख मारने वाला इमोजी भी लगाया है।

37 साल के कार्तिक पिछली बार भारत के लिए टी20 वर्ल्ड कप में खेलते दिखे थे। ट्वीट में कही गई सही है। वह एक खिलाड़ी तौर पर तो नहीं, लेकिन कमेंटेटर के तौर पर जरूर विश्व कप में दिख सकते हैं। कार्तिक हाल ही में एशेज में कमेंट्री करते दिखे थे। ऐसे में वर्ल्ड कप में भी वह दिख सकते हैं। कार्तिक इससे पहले 2016 वनडे वर्ल्ड कप में टीम इंडिया का हिस्सा रहे थे। तब टीम इंडिया सेमीफाइनल में हार गई थी। इसके बाद वह 2022 टी20 वर्ल्ड कप में भी दिखे। हालांकि, उसके बाद से कार्तिक को खेलने का मौका नहीं मिला है। कार्तिक का इस साल आईपीएल में भी फर्म खराब रहा था। हालांकि, कार्तिक ने अब तक संन्यास नहीं लिया है। उन्होंने पांच सितंबर

2008 को इंग्लैंड के खिलाफ लंडन में डेब्यू किया था। अब तक भारत के लिए वह 26 टेस्ट, 48 वनडे और 60 टी20 अंतरराष्ट्रीय खेल चुके हैं। टेस्ट में उनके नाम 9025 रन, वनडे में 9952 रन और टी20 में 626 रन हैं। टेस्ट के अलावा उनके नाम किसी भी फॉर्मेट में शतक नहीं है। टेस्ट में भी उन्होंने एक शतक लगाया है।



दी नैक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक
बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन
ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा
हुसैनिया बिल्डिंग बक्सिपुर
गोरखपुर से मुद्रित एवं 665
बी गंगा टोला, निकट
जानकी बिल्डिंग मैटेरियल
बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर
से प्रकाशित। पिन:- 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार

मो. नं०. 7307180148, 9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोट:- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद
गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।